Vol II Issue XI Dec 2012 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.11,Dec. 2012
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

सुर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में भारतीयता

पंढरीनाथ महादेवराव वाघमारे

एम.ए. ह्यहिंदी इतिहासह्र एम.एड्. पीएच.डी. सेट् नेट ह्यहिंदीह्र

सारांश :

'भारतीयता' एक मनोभाव है जो भारत मूलक चेतना पध्दति और आचरण संहिता को अपने में समाविष्ट किए हुए है | भारतीय जीवन की अन्तश्चेतना एवं उसके मूल स्वरूप का बोध् हमारी संस्कृति साहित्य् कला् एवं धर्माचरण में समाविष्ट है | भारत की संस्कृति सामाजिक संस्कृति है जिस में विभिन्न धर्म् संप्रदाय् नश्ल् जातियाँ भाषाएं एवं आचरण पध्दतियाँ एकमेव होकर नए साँचे में ढलकर् भारतीय होने का नव्वीन अस्तित्व बोध कराती हैं |

प्रस्तावना:

विदेशी आक्रांताओं द्वारा भारत के सांस्कृतिक स्वरूप को विकृत करने का भरसक प्रयास हुआ् पर यह कुप्रयास स्थायी प्रभाव न डाल सके | अंग्रेजों ने भी भारत के गौरवमय सांस्कृतिक स्वरूप को अनुचित हस्तक्षेप करके छिर्न्नभिन्न करना चाहा् लेकिन जितनी बार हमारी संस्क ति पर हमले हुए् हम और अधिक समन्वित होकर निखरे | बिखरने की हद पहुँच कर भी स्वयं को निरापद रखा् क्योंकि भारतीय संस्कृति में दूसरों को आत्मसात करने की अद्भुत क्षमता थी |

भारतीयता की पहचान व इसके स्वरूप की अवधारणा का उन्मेष इसी काल में दृढ़तर हुआ | इसे पुनर्जागरण काल भी कहा गया | इसी काल में श्रीमती उनीबेसेण्ट् लोकमान्य तिलक् अरविंद घोष् महात्मा गांधी् डॉ.आंबेडकर आदि की उदात्त चिंतन धारा और जीवनादर्श भारतीयता को एक नया आकार देने में समर्थ हुए | उक्त सभी आंदोलनों् समाजसुधारों एवं उनके अधिष्ठाताओं का व्यापक प्रभाव प्रायः जीवन के हर क्षेत्र में परिलक्षित हुआ | भारतीय संस्कृति साहित्य् कला एवं समाज चेतना में इन सबका सुस्पष्ट प्रभाव दृष्टव्य है | समाज और राष्ट्र की तत्कालीन तस्वीर उस समय के साहित्य मे देखी जा सकती है | उन सभी विचारकों एवं राष्ट्र निर्माताओं का चिंतन आज भी किसी न किसी रूप में हमारी चेतना से संबंध है | आधुनिक हिंदी काव्य में यह चेतना हर स्तर पर महसूस की जासकती है | युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी् प्रेमचंद् मैथिलीशरण गुप्त् माखन लाल चतुर्वेदी् प्रसाद् पंत् महादेवी् दिनकर् नवीन् रामनेश त्रिपाठी् हरिऔध सहित महाप्राण निराला आदि इस प्रभाव से प्रभावित हुए |

प्रस्तुत शोधलेख में 'महाप्राण निराला और उनके काव्य में भ्आरतीयता' ही मेरा प्रतिपाद्य है् अतः महाप्राण निराला के जीवन मूल्य और काव्य को भारतीय सन्दर्भो में समझने का प्रयास ही प्रासंगिक है | 'निराला' अपनी भूमि की उपज थे | यह भूमि श्यामल बंग देश से लेवर बैसवाड़े तक फैली है | इन दोनों परिवेशों का प्रभाव उनके व्यक्तित्त्व में मिल गया था | एक में उनके जीवन का उन्मेष और यौवन का विकास हुआ् दुसरे में जझिना पडा | एक उनके स्वप्नों की भुमिधा् दुसरा संघर्ष का आखाडा | उनकी काव्य चेतना इन दोनो भूमियों में साहित्यीक् सामाजिक् सांस्कृतिक जन से पुष्ट हुई थी | उनकी 'जुही की कली् तरंग बंग् शेफाली' साहित्य से प्रेरित होकर खिली थी|'शक्तिपुजा् मातृभक्ति् वेदांत का अद्वेतवादी दर्शन् जनसेवा' के संस्कार भी उन्हे विवेकानंद् रामकृष्ण मिशन से प्राप्त हुए थे | विद्रोह का कांतिकारी सूर भी उन्हें वही से मिला था | इसके लिए मजरूल इस्लाम का काव्य उत्तरदायी था | बंगभूमि वैसे भी मातृसाधना का केंद्र है | निराला जिन दिनों कलकत्ते में थे् उन नवजागृती का लहरे बंगभूमि से टकराकर संपूर्ण बारत को जगा रही थी | रवींद्रनाथ अपनी प्रतिभा की प्रभाव से समुचे भारत के हदयहार बन चुके थे | इसी परिवेश में निराला के व्यक्तित्व का विकास हुआ | इधर बैसवाडा हिंदी साहित्यीक् सांस्कृतिक चेतना का केंद्र बन रहा था | पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी जो भारतेंदु के बाद सरस्वती के द्वारा हिंदी जगत्का नेतृत्व कर रहे थे् इसी भूमि की उपज थे |

छायावादी कवियों में निराला का व्यक्तित्व अत्यंत जटिल था् विरोधो का संगम एवं विसंगतियों का पुंज रहा है | उन्हें एकसाथ आत्मनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ् कवि एवं योगी् सरल एवं दुरूह् कोमल एबं कठोर् उग्र एवं विनम्र् अहंवादी एवं अहंविरोधी् रहस्यवादी एवं यथार्थवादी् छायावादी एवं प्रगतिवादी एवं स्वच्छंदतावादी कहा गया है |

आचार्या नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार दार्शनिक स्तर पर उनके काव्य और व्यक्तित्व दोनों में एक सुत्रता को खोजा जा सकता है | अद्वैतवादी उनकी रचनाओ में अत्यंत प्रभावित है | स्वामी माधवानंद का सान्निध्य और रामकृष्ण मिशन के वेदांती उन्हें विशेष रूप से प्रभावित करते है | पर उनका निराला के अपने निराले ढंग में ग्रहाण किया | वे कविता लिखते नही इसे जीते थे| उनका हदय करूणा और सहानुभूति से भरा था | वो अपने परिवेश के प्रति पूर्ण सजग थे | अत्याधिक संवेदनशीलता उनकी प्रमुख विशेषता थी | इसीलिए छोटी से छोटी से प्रतिकिया् सामाजिक विषमता की छोटी से छोटी लहर् सीधे उनके हदय से टकराकर उन्हें विचलित कर देती थी | उनकी जीवन की छोटी छोटी क्षोभ प्रतिकिया उनके काव्य में देखी जा सकती है | उनका काव्य उनके जीवन की प्रतिकृति है |

डॉ.रामशंकर द्विवेदी निराला की रचनायात्रा के विषय में यह विचार उध्दृत किए है कि 'निराला की प्रतिभा बहुमुखी थी | साहित्य का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो् जिसमें उनकी उर्वर प्रतिभा ने चमत्कार न दिखाया हो् लेकिन उनकी किर्ती वल्लरी प्रमुखता कविता धारा पर ही फलीफुली है | निराला की काव्य चेतना का परिचय हमें जुही की कली से मिलता है | यह निराला की काव्य प्रतिभा का तोरणद्वार है |'

'राम की शक्ति पुजा् सरोज स्मृति और तुलसीदास' उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ मानी जाती है | तुलसीदास रचना में एक ओर इतिहास के परिपार्श्व में मध्यकालीन भारतीय संस्कृति का चित्रण हुआ है और दुसरी ओर कवि द्वारा मानसकार के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है | तुलसीदास में कवि का क्षेत्र नवीन है | रहस्यवाद का कथारूप में उसने एक नया चित्र खिंचा है |

Title : सुर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में भारतीयता
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] पंढरीनाथ महादेवराव वाघमारे **yr:2012 vol:2 iss:11**

'राम की शक्ति पुजा' में राम का असमर्थ निराशा और संशयग्रस्त मन सीता के दिव्य सौंदर्य के ध्यान से विजिगीषुवृत्ति से भर जाता है | नारी सौंदर्य का ऐसा प्रभाव सौंदर्य के प्रति उनकी उदात्त दृष्टि का परिचायक है | किंतु निराला की दुर्गा कृतिवास की पारंपारिका दुर्गा नहीं है | जाम्ववन की सलाह है | शक्ति की करो मौलिक कल्पना यह मौलिक कल्पना रावण के पास नही है राम अपनी मौलिक कल्पना से उसकी पारंपारिक साधना को व्यर्थ कर देंगे | कल्पना की मौलिकता किस बात में है ? राम कहते हैं

देखो बंधुवर सामने स्थित जो यह भूधर
शोभित शतहरित गुल्म तृण से श्यामल सुंदर
पर्वती कल्पना है रस की मकरंद बिंदु
गरजता चरण प्रांत पर सिंह वह नहीं सिंधू
दशधिक समस्त है हस्त और देखो ऊपर
अंबर में हुए दिगंबर और चित्शशी शेखर
लख महाभाव मंगल पदलत धस रहा गर्व
मानव के मन का असुर मंद हो रहा खर्व |

जो सामने प्रत्यक्ष भूधर है पार्वती उसीकी कल्पना है | अर्थात्यह भारत एक पर्वत कल्पना है पार्वती दशो दिशाएँ उनके हाथ है आकाश रूप में शिव उनके मस्तक पर है गरजता हुआ सिंधू ही नही है और जिस असूर को दुर्गा ने मारा है वह मानव के मन में है | शक्ति की कल्पना में मौलिकता यह है | यही मौलिक भाव निराला की भारतीयता का द्योतक है |

'मतावाला' में निराला नाम से जो पहली कविता छपी वह भारतीय गरिमा से ओतप्रोत है |

बढ़ गई शोभा सखी सावन सलोनी हुई
बढे भाग्य भरत के गए दिन आए फिर
रक्षा से बंधे है भारतीयों के कोमल कर
मंगल मनाती क्यों न रहा कलेजा चिर ऋ
तारों इन सुनहलो के आगे सितारे मात
अथवा प्रकाश रहा बादल दलों से घिर ऋ
देख करतूत ऐसी वीरवर सुपुत्रों की
भारत का गर्व से उठेगा या झुकेगा सिर ऋ
कंगालो का कल अहो इस राखी के रंग में छिप्पा
भूत भविष्यत्वर्तमान है दिनों का तीनों लिया |

प्रथम महायुध्द की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के उभार का समय हिंदी साहित्य में कवि निराला का अभ्युदय काल भी है |

हिंदी में उनकी पहली प्रकाशित रचना जन्मभूमि पर है -

जन्मभूमि मेरी है जगन्महारानी . . . . . !

दुसरे महायुध्द के बाद राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के नए कांतिकारी उभार के दिनों में इलाहाबाद के विद्यार्थियों ने वीरता सब साम्राज्यवादी दमन का मुकाबला किया तब उनका अभिनंदन करते हुए निराला ने कहा -

निकले क्या कोंपल लाल फाग की आग लगी है
फागुन की टेढी तान खुन की होली जो खेली |

डॉ . रामविलास शर्मा ने लिखा है - "भारतीय चिंतर पध्दति में ज्ञान भक्ति और कर्म ये तीन योग प्रसिध्द है | विद्वानों के अनुसार इनमें से किसी एक के सहारे मनुष्य को ईश्वर प्राप्ती हो सकती है | निराला के लिए ज्ञान का अधिष्ठान है भारत जीवन समस्त कर्मो का लक्ष्य है भारत | निराला एकप्रिय कल्पना थी भारत अपने शब्दार्थ से ही ज्ञानमय है | 'भा' अर्थात्प्रकाश भारत अर्थात्प्रकाशवान | 'वर्तमान धर्म' में उन्होंने इसी अर्थ विचार से भारत के बारे में लिखा था भारत अपने नाम से ही धर्मात्मा है |" सन १९४२ में निराला जी ने एक गीति लिखा था -

भारत ही जीवन धन जोर्तिमय परामरमण |
सर्रसरिता वर्नउपवन . . . . . |

निराला की धार्मिक आस्था उनकी भक्ति का आधार भारत है | उनके रचनाओं में देवी सरस्वती काली महावीर आदि देवताओं की प्राण प्रतिष्ठापणा है | उनके काव्य में सरस्वती भारतीयता का स्वरूप है | भारत का सबसे भव्य और विराट चित्र 'नयेपत्ते' संग्रह की रचना देवी सरस्वती में है -

हरी भरी खेतों की सरस्वती लहरायी |
मग्न किसानों के घर उन्मद बीज बधाई |

निराला के लिए स्वाधीनता का अर्थ धनी वर्गो की खुशहाली नही है इसीलिए भ्आरत रूपा देवी सरस्वती में उन्हें किसान जीवन के दृश्य दिखायी देते है |

DSpace™

निराला भारतीयता का स्वांग नही करते नही पारंपारिक जड़ता मूलक शास्त्र परंपरा से चिपकते है वे तो मानवतावादी जनकल्याणकारी नवीन परंपरा का सृजन करते हुए भारतीयता का नवीन स्वरूप गढ़ते है |

निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि निराला जी भारतीय समाज और संस्कृति परिष्कृत रूप गढ़ने में व्यस्त रहे | उन्होंने वर्णव्यवस्था जातिभेद धर्मांधता तथा रूढ़ियों का साहित्य और जीवन दोनों स्तरों पर कडा विरोध किया | वे मानवता के पुजारी थे | उनके चिंतन में चतुरी चमार को भी वही दर्जा प्राप्त है जनेउधारी ब्राम्हण को है | निराला की यह चिंतन धारा युरोप या अन्य राष्ट्रों से आयातीत नहीं थी | वरन्शुध्द वेदांत और ब्रम्हज्ञान के लेखों में उनका भारतीय चिंतन आदमी के असली स्वरूप को रेखांकित करता है | उनके साहित्य में भारत का भावी स्वरूप भी रूपायित हुआ है | 'भिक्षुक' और 'वह तोडती पत्थर' इसी जमीन की उपज है | भारतीय भूमि से समेटे गए संपूर्ण ज्ञान को वे भारतीयता की श्रीवृध्दी में ही खर्च करना चाहते थे | यही नहीं वे भारतीयता आड़ में चल रहे प्रपंच को भी उजागर करते है | क्षुद्र और नारी का जितना शोषण इस देश में हुआ उतना अन्यत्र नहीं | इस शोषण मूलम व्यवस्था का तीव्र विरोधू उनके साहित्य में मुखर होता है | भारतीयता की अवधारणा और उसका यथार्थ स्वरूप वे मानवतावाद के रूप में प्रकट करते है फिर ऊँचनीच और भेदभाव किसने पैदा किए ? निराला आजीवन ऐसे ही पाखंड और रूढ़ीगत पर्वतों को तोड़ते फोड़ते रहे |

भारतीयता की पहचान उनके काव्य में समता मूलक भावना लेकर अवतरित हुई ऐसी समता जो व्यवहारतः आचरणमूलक हो कोरी पुस्तकीय या पौराणिक नहीं | ब्राम्हांश से उत्पन्न हम सभी भारत की ही संतान है | दर्शन जब प्रदर्शन का रूप लेता है और धर्म कर्मकांडों की रोजीरोटी बन जाता है तब विभेद पैदा होता है यही विभेद अनिष्टकारक विनाशकारी और अशुभ्र है | यही निराला ने अपने काव्य में प्रकट किया है | इसीलिए निराला भारतभूमि एक महान सपुतों में गिने जाते है जिन्हें भारतीयता की पूर्ण उपज तथा परिवेश का ज्ञान था | जो भारत भूमि की नर्सनस वे वाकिफ थे | ऐसे भारत के सपुत को कोर्टिकोटि प्रणाम . . . . . !

संदर्भ संकेत :-

१ . आधुनिक हिंदी काव्य मे राष्ट्रीय चेतना - डॉ . शुभ लक्ष्मी |
२ . निराला की साहित्य साधना प्रथम खंड़ डॉ . रामविलास शर्मा |
३ . साहित्य और सौंदर्य वोध - डॉ . रामशंकर द्विवेदी |
४ . मतवाला - पहला अंक |

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net